

सूत्रम्

अल्पाक्षरम् असन्दिग्धं सारवद् विश्वतोमुखम्।

अस्तोभम् अनवद्यं च सूत्रं सूत्रविदो विदुः ॥

अल्पाक्षरम् असन्दिग्धं सारवद् विश्वतोमुखम्। अस्तोभम् अनवद्यं च सूत्रं सूत्रविदो विदुः ॥

अल्पाक्षरम् – যেখানে অল্প খুব কম অক্ষরের বর্ণের ব্যবহার হয়, असन्दिग्धम् – যেখানে সন্দেহের কোন অবকাশ নেই, सारवद् – যেখানে শুধু সারটুকুই আছে, विश्वतोमुखम् – ছোটো হলেও যার অর্থ সর্বতোমুখি আকারে ছোট হলেও অর্থের দিক থেকে অনেক বড়, अस्तोभम् – গান করার সময় যেসব স্তোভ শব্দের প্রয়োগ হয় তা বর্জিত, अनवद्यम् – যেখানে গর্হিত নিন্দনীয় শব্দের প্রয়োগ থাকে না তাকে सूत्रविदः – সূত্রবিদ্-রা सूत्रम् - সূত্র विदुः – বলেন জানেন।

वार्तिकम्

उक्तानुक्त-दुरुक्तानां चिन्ता यत्र प्रवर्तते।
तं ग्रन्थं वार्तिकं प्राहुः वार्तिकज्ञाः मनीषिणः।।

उक्तानुक्त-दुरुक्तानां चिन्ता यत्र प्रवर्तते।
तं ग्रन्थं वार्तिकं प्राहुः वार्तिकज्ञाः मनीषिणः।।

उक्ता-नुक्त-दुरुक्तानाम् – उक्त माने पाणिनि सूत्रे या बला হয়েছে তার প্রয়োজন, অনুক্ত
যা বলা হয়নি তার সংযোজন, আর দুরুক্ত যা দ্বিতীয় বার বলা হয়েছে বা যেখানে কঠিনতা
আছে সেখানে সমাধান ও স্পষ্টতা চিন্তা – চিন্তা করার প্রবর্ততে – প্রবৃতি যত্র - যেখানে
তম্ - সেই গ্রন্থম্ - গ্রন্থকে বার্তিকজ্ঞাঃ – যারা বার্তিক তৈরি করেছেন সেরকম
মনীষিণঃ – পণ্ডিতরা বার্তিকম্ - বার্তিক প্রাহুঃ – বলেন।

भाष्यम्

सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र पदैः सुत्रानुसारिभिः।
स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्यं भाष्यविदो विदुः ॥

सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र पदैः सूत्रानुसारिभिः ।
स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्यं भाष्यविदो विदुः ॥

यत्र – ये सूत्रग्रन्थे सूत्रानुसारिभिः - सूत्रस्य पदैः – पदेषु द्वारा सूत्रार्थः –
सूत्रेषु अर्थ वर्ण्यते- वर्णितं भवति, स्वपदानि च – एवं ये सकल पदेषु द्वारा वर्णना
करा भवति तेषु वर्ण्यन्ते – वर्णना करी भवति तेषु ग्रन्थके भाष्यविदः –
भाष्यविदेषु भाष्यम् - भाष्यं विदुः – बलेन जानन्ति ।